सामर्थी

आधार

एक से एक को

Dynamic Churches
International

समर्पण

सामर्थी आधार एक से एक प्रत्येक उस व्यक्ति के लिए समर्पित है जिसने प्रभु यीशु मसीह को अपना व्यक्तिगत उद्धारकर्ता ग्रहण किया है और अपने नये जीवन में प्रभु के साथ सम्बन्ध बढ़ाना चाहता है। आपके साथ मिलकर हम अपने आप को प्रभु को समर्पित करते हैं।

स्वीकृति

इस सामग्री का निर्माण युवा मसीहियों हेतु सर्वोत्तम सूचनाओं को उपलब्ध कराने के लिए किया गया है ताकि वे परमेश्वर के साथ अपने व्यवहार व चलन में उन्नति करें व दूसरों तक इस ज्ञान को पहुँचा सकें। हम धन्यवाद के साथ उन सभी लोगों को सराहना चाहते हैं जिन्होंने अपने विचारों का सहयोग इस शिक्षा सामग्री का निर्माण करने में दिया।

''इसलिए यदि कोई मसीह में है तो वह नयी सृष्टि है पुरानी बातें बीत गयी हैं देखो सब बातें नई हो गयी हैं।'' (2 कुरि. 5:17)

© डायनामिक चर्चेज़ इन्टरनेशनल 2007 के अधिकार इस पुस्तक के अनुवाद सहित सारे अधिकार आरक्षित हैं।

अतिरिक्त प्रतियों व जानकारी हेतु, सम्पर्क करें:

Dynamic Churches International
164 Stonegate Close,
Airdrie, Alberta, Canada, T4B 2V2
(403) 912-4438
dcimiddleton@shaw.ca
www.dynamicchurches.org

रेव्ह. पीटर कांसुग
निदेशक
लीडरशिप ट्रेनिंग सेन्टर
बाबूबासा, देवदंगा, चम्पासरी
पोस्ट ऑफिस – आंचल–734003
सिलीगुड़ी, पश्चिम बंगाल, भारत

Printed by Devtech Printers and Publishers Pvt. Ltd. Email: devtech_printers@sihy.com

विषय सूची

		पृष्ठ
1.	मसीह में एक नया जीवन	1
2.	विजय में एक नया जीवन	5
3.	एक सामर्थशाली नया जीवन 'मेरी कहानी बताना' कार्य पेज	9
4.	एक सन्तुलित नया जीवन	15
5.	सामर्थी शिष्यता – एक अवसर	19
6.	सामर्थी आधार अगुवों की उत्तर–पुस्तिका	21
7.	उपलब्धि प्रमाण–पत्र	25

सामर्थी आधार

सत्र 1
मसीह में एक नया जीवन

प्रभु यीशु मसीह को अपना व्यक्तिगत उद्धारकर्ता ग्रहण करना एक अनन्त रिश्ते की शुरुआत है जो कि आपको धरती व स्वर्ग में उत्तेजित जीवन हेतु अद्‌भुत क्षमता प्रदान करता है।

इस सत्र में हम चर्चा करेंगे–
1. अनन्त जीवन क्या है ?
2. प्रभु यीशु मसीह को व्यक्तिगत रूप से जानने का फ़ायदा।
3. कैसे आप निश्चित हो सकते हैं कि आप यीशु के हैं ?

1. अनन्त जीवन परमेश्वर को व्यक्तिगत रूप से जानना है।

''और अनन्त जीवन यह है कि वे उस एकमात्र सच्चे परमेश्वर को, और प्रभु मसीह को जिसे तूने भेजा है, जाने।''

– यूहन्ना 17:3

''**अनन्त जीवन**'' मात्र दीर्घ आयु से बढ़कर है। यह एक सम्पूर्ण नया जीवन है, एक ऐसा जीवन जैसा परमेश्वर के पास है, जिसमें किसी प्रकार की कोई सीमाएं नहीं हैं। परमेश्वर का प्रेम किसी व्यक्ति के योग्य होने, या प्रिय होने पर सीमित नहीं होता।

यूहन्ना 3:16 कहता है, ***''क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उसने अपना इकलौता पुत्र दे दिया ताकि जो उस पर विश्वास करे वह नाश न हो परन्तु अनन्त जीवन पाए।''***

इसी प्रकार से वह अपने धीरज, भलाई, क्षमा या किसी और बातों में सीमित नहीं है।

''**अनन्त जीवन**'' होने का अर्थ है कि आपके पास सम्पूर्ण व अर्थपूर्ण जीवन जीने का अवसर है।

नये जीवन की पूर्णता में प्रवेश करने का क्या फायदा है ?

2. प्रभु यीशु को व्यक्तिगत रूप से जानने के फायदे:

प्रत्येक आयत को पढ़ें व संगत विचार को जोड़ें (बिन्दुओं को जोड़े)

आयत	**परमेश्वर ने मेरे लिए क्या किया**	**मुझे क्या फायदा है**
रोमियों 5:8	परमेश्वर ने अपना प्रेम मुझ पर प्रगट किया	पुरानी बातें बीत गयी हैं नई चीज़ें आ गईं हैं
कुलुस्सियों 1:13-14	परमेश्वर ने मुझे अन्धकार के राज्य से मुक्त किया	मैं सन्तुष्ट हो सकता हूँ
2 कुरन्थियों 5:17	मैं एक नयी सृष्टि हूँ	एक पापी के समान, मसीह मेरे लिए मरा
प्रकाशित वाक्य 3:20	मसीह मेरे जीवन में आया	मैं कभी नाश न होऊंगा
इब्रानियों 13:5	मसीह मुझे कभी न छोड़ेगा	उसके पुत्र के राज्य में मुझे रूपान्तरित किया
यूहन्ना 10:28	यीशु ने मुझे अनन्त जीवन दिया	वह मुझे परमेश्वर तक ले आया
1 पतरस 3:18	मसीह मेरे पापों के कारण मरा	मैं उसके साथ संगति रख सकता हूँ।

ये सारे फायदे परमेश्वर के प्रेम का परिणाम हैं, और जो कुछ उसने किया है हम उसे प्रभु पर विश्वास करने के द्वारा प्राप्त करते हैं।

इफिसियों 2:8-9 को देखें व रिक्त स्थान की पूर्ति करें।

> ***... क्योंकि ________ द्वार ________ तुम्हारा उद्धार हुआ है और यह ________ वरन ________ और न ________ के कारण, ऐसा न हो कि कोई घमण्ड करे ...***

हमारे **विश्वास** के द्वारा ही उद्धार सम्भव हुआ। (सही जबाब के नीचे लाइन खींचे)

1. आप क्या कर सकते हो ?
2. यीशु ने क्या किया है ?
3. आपकी कलीसिया ने क्या किया ?
4. आपके माता पिता ने क्या किया ?

3. कैसे आप निश्चित हो सकते हैं कि आप यीशु के हैं ?

पढ़ें - यूहन्ना 3:16
परमेश्वर का उद्देश्य क्या था ? ________________

उसने क्या किया ? ________________

किसे उसका फायदा होगा ? ________________

उन्हें क्या मिलेगा ? ________________

पढ़ें- प्रकाशित वाक्य 3:20
मसीह में विश्वास प्रगट करने का एक मार्ग है कि ________________

____

आपकी क्या जिम्मेदारी है ? ________________

उसकी क्या जिम्मेदारी है ? ________________

क्या आपने मसीह को अपने जीवन में आमन्त्रित किया है ? वह इस समय कहाँ है ?

____

अगर आप अपने उद्धार के निमित्त निश्चित नहीं है, तो आप एक स्वतन्त्र इच्छा से प्रार्थना करके अभी मसीह को ग्रहण करने के द्वारा निश्चित हो सकते हैं।

यहाँ एक प्रस्तावित प्रार्थना है:

> ***प्रभु यीशु, मैं एक पापी हूँ तथा मैं अपना उद्धार नहीं कर सकता। मेरे पापों लिए क्रूस पर अपनी जान देने के लिए धन्यवाद। इस समय मैं आपको अपने जीवन में आमन्त्रित करता हूँ तथा आपको अपना व्यक्तिगत उद्धारकर्ता करके ग्रहण करता हूँ। मेरे पापों को क्षमा करने व मुझे अनन्त जीवन देने के लिए धन्यवाद। मैं अपने जीवन का सारा नियन्त्रण आपके हाथ में सौंपता हूँ और चाहता हूँ कि आप अपनी इच्छानुसार मेरे जीवन में अपना अनन्त जीवन जीयें।***

क्या आपने यीशु को अपने जीवन में ग्रहण किया ? ________________

प्रभु यीशु आपसे सम्बन्ध में अभी कहाँ है ? प्रकाशित वाक्य 3:20

___

किस अधिकार से आप जानते हैं ? ___

पढ़ें – 1 यूहन्ना 5:10–13
कौन अनन्त जीवन देता है ? (पद 11) ___

कहाँ अनन्त जीवन मिलता है ? (पद 11) ___

किसके पास अनन्त जीवन है ? (पद 12) ___

किसके पास अनन्त जीवन नहीं है ? (पद 12) ___

___

जो गवाही परमेश्वर ने अपने पुत्र के प्रति दी है उस पर विश्वास न कर, परमेश्वर को कहना है। (पद 10) देखें ___ क्या वह है ? ___

(गलत शब्दों पर **गलत** का निशान लगायें)
''यह बातें इसलिए लिखी गयीं कि* (आशा करें, महसूस कर सकें, अन्दाजा लगा सकें, प्रति कार्य करें, जान सके) *हमारे पास अनन्त जीवन है'' (1 यूहन्ना – 5:13)

क्या आप **जानते हैं** कि आपके पास अनन्त जीवन है ? ___

स्वयं करें

1. निकेदमुस की कहानी को पढ़े – यूहन्ना – 3:1–8
2. निम्नलिखित पद को याद करें:

और वह गवाही यह है कि परमेश्वर ने हमें अनन्त जीवन दिया है और यह जीवन उसके पुत्र में है, जिसके पास पुत्र है उसके पास जीवन है और जिसके पास परमेश्वर का पुत्र नहीं उसके पास जीवन भी नहीं है। (1 यूहन्ना – 5:11,12)

जो बातें मुझे इस नये जीवन से रोकती है उन पर मैं कैसे विजय प्राप्त कर सकता हूँ ?

हमारा अगला सत्र है: **विजय में एक नया जीवन**

समय ___ जगह ___ दिनॉक ___

प्रार्थना से समाप्त करें।

सामर्थी आधार

सत्र 2
विजय में एक नया जीवन

1 यूहन्ना 5:11, 12, पुन: पढ़ें ___ याद से उच्चारण उपरान्त जाँच।

आपने यीशु मसीह के साथ नये जीवन का आरम्भ कर दिया है, एक ऐसा जीवन जिसमें अदभुत क्षमता है अगर परमेश्वर के अनुसार जी जाये। इसलिए पाप के बीच में आ जाने से इसमें विनाश का खतरा बना रहता है।

इस सत्र में हम चर्चा करेंगे :
1. पाप क्या है
2. हम क्यों पाप करते हैं
3. प्रभु यीशु मसीह पापों हेतू परमेश्वर की दवा है
4. परमेश्वर की इस दवा का प्रयोग हम कैसे करें

1. पाप क्या है

परमेश्वर की इच्छा के विरूद्ध अपनी इच्छाओं को पूरा करना पाप है। पाप विद्रोह, झूठ का स्वभाव है, धोखे इत्यादि विद्रोह का परिणाम है।

इससे पहले कि आपने मसीह को ग्रहण किया, पाप आपका परमेश्वर की संगति में आने से रोकता रहा। इफिसियों 2:1–5 तक पढ़ें।

आपकी आत्मिक स्थिति कैसी थी ? (पद 1) ___

आपके जीवन पर किसका अधिकार था ? (पद 2) ___

स्वभाव से आप क्या थे ? (पद 3) ___

अब परमेश्वर की दया से आपने मसीह को ग्रहण कर लिया है, अब आप कौन हो गये ? (पद 4,5) ___

हमारे जीवन में पाप के परिणाम क्या हैं ? इन पदों को पढ़ें व चर्चा करें।
रेमियों 6:23, रोमियों 2:8,9, भजन संहिता 66:18, यूहन्ना 8:34

2. हम पाप क्यों करते हैं

परमेश्वर ने हमें आज्ञाकारी बनने या आज्ञाकरी बनाने को इच्छा प्रदान की है (रोमियों 6:12,13) मसीही होने के नाते पाप हमें परमेश्वर की संगति से रोकता है। परमेश्वर के समान बढ़ने में तथा सोचना सीखने में समय लगता है। हमरे मन को नया होना आवश्यक है। (रोमियों 12:1,2)

पाप व परीक्षाऐं सभी के लिए सामान्य है
परीक्षाओं के तीन प्राथमिक क्षेत्र कौन-कौन से हैं ?

1 यूहन्ना 2:15,16 ____________________

____

क्या परीक्षा पाप है ? इब्रानियों 4:15 ____________________

____

परीक्षा को पाप तक पहुँचने से रोकने के लिए हम क्या कर सकते हैं ?
1 कुरन्थियों 10:13 ____________________

____

परीक्षा से बचने के लिए मार्ग हेतू परमेश्वर आपके जीवन में क्या कर रहा है ? (फिलिप्पियों 2:13) ____________________

____

रोमियों 6:1,2 पढ़ें मसीह होने के नाते हम निरन्तर पाप क्यों न करते रहें ?

____

3. प्रभु यीशु मसीह पापों हेतू परमेश्वर की दवा है

मसीह की मृत्यु का उद्देश्य था:
अ. हमें परमेश्वर के पास ले आना
ब. हमारे पापों का मूल्य चुकाना (1 पतरस 3:18)

निम्न अनुच्छेद को पढ़ें-

''उसने तुम्हें भी जो अपने अपराधों और अपने शरीर की खतना रहित दशा में मुर्दा थे उसके साथ जिलाया और हमारे सब अपराधों को क्षमा किया, और विधियों का वह लेख जो हमारे विरोध में था मिटा डाला और क्रूस पर कीलों से जुड़कर सामने से हटा दिया।''

(कुरि. 2:13,14 लिविंग बाइबल)

आपके कितने पापों के लिए यीशु मसीह मरे ?

कुलुस्सियों 2:13,14 (ऊपर) ____________________

सब मतलब **सब** - भूतकाल, वर्तमान, व भविष्य के पाप। अब आपने प्रभु यीशु मसीह को ग्रहण कर लिया है आप पूर्णत: क्षमा कर दिये गये हैं किस प्रकार यह जानना कि आपको क्षमा मिल गयी है आपके जीवन को प्रभावित करता है ?

____

____

4. परमेश्वर की इस दया का प्रयोग कैसे करें ?

याद रखें कि प्रभु यीशु मसीह की क्रूस पर मृत्यु के कारण हमारे सारे पाप क्षमा हो गए हैं परन्तु परमेश्वर की संगति में निरन्तर बने रहने के लिए हमें वर्तमान पापों को जो याद हैं अंगीकार करना होगा।

यदि हम अपने पापों का अंगीकार कर लें तो मसीह क्या करेगा ?

1 यूहन्ना 1:9 ____________________

अंगीकार का अर्थ अपने पापों के प्रति परमेश्वर से सहमती व्यक्त करना।

ए. **सहमत** हों कि वह पाप है

ब. **परमेश्वर को धन्यवाद** दें कि उसने पहले पापों को क्षमा कर दिया है

स. अपने बुरे स्वभाव को **बदलें** (पश्चाताप)

द. **परमेश्वर को अनुमति** दें कि वह आपकी क्रियाओं को बदलने में आपको सामर्थ दें

इ. विश्वास के द्वारा अपनी क्षमा की **घोषणा करें** व अपराधों से स्वतन्त्र जीवन जीयें।

जब आप अपने पापों का अंगीकार कर पापों की घोषणा करते हैं तब आप एक विजयी जीवन का आनन्द उठा पायेंगे।

स्वयं करें

कुछ समय निकालकर एक ऐसी बातों की सूची बनायें जो आपके जीवन परमेश्वर को अप्रसन्न करती हो। परमेश्वर से स्वीकार करें यह पाप है। अपनी सूची पर 1 यूहन्ना 1:9 लिखें। परमेश्वर का धन्यवाद दें कि उसने आपको सारे पापों को क्षमा कर दिया है। अब जैसे एक क्षमा प्राप्त व्यक्ति जीवन जीता है आप विजय का जीवन जियें। उस सूची को नष्ट कर दें क्योंकि अब वह बातें केवल आपके व परमेश्वर के बीच में है।

1. भजन संहिता 32 पढ़ें-
   दाऊद अपने पापों के साथ किस प्रकार व्यवहार करता है?

   अंगीकार करने से पूर्व वह कैसा महसूस करता है?

   अंगीकार करने के पश्चात उसे कैसा महसूस होता है?

2. लूका 15:11-32 पढ़ें-
   यह पद किस प्रकार बताते हैं कि परमेश्वर हमसे कैसा वर्ताव करता है?

3. निम्न पद को याद करें-

   ''यदि हम अपने पापों को मान लें तो वह हमारे पापों को क्षमा करने व हमें सब अधर्म से शुद्ध करने में विश्वास योग्य व धर्मी है।'' 1 यूहन्ना 1:9

   मैं इस नये जीवन को जीने की सामर्थ कैसे प्राप्त कर सकता हूँ?

   हमारा अगला सत्र **सामर्थ के साथ एक नया जीवन** है।

   समय ____________ स्थान ____________ दिनाँक ____________

   प्रार्थना द्वारा समाप्त करें।

सत्र 3

एक सामर्थशाली नया जीवन

पुनः पढ़ें 1 यूहन्ना 1:9 ____________ अच्छे से उच्चारण उपरान्त परखें।

मसीही जीवन एक अदभुत जीवन है, वास्तव में इतना महान कि इसे मानवीय तरीकों से जीना असम्भव है। परन्तु परमेश्वर का पवित्र आत्मा हमें दिया गया है। ताकि हम इसे जी सकें। क्या उपलब्धि है।

> इस क्षेत्र में हम चर्चा करेंगे :-
> 1. नयी सृष्टि होने के नाते आपकी नयी क्षमताऐं
> 2. आपका नया सामर्थ स्रोत - पवित्र आत्मा
> 3. किस प्रकार से पवित्र आत्मा द्वारा सामर्थ व अगुवाई पायें

1. नयी सृष्टि होने के नाते आपकी नयी क्षमताऐं :

2 कुरन्थियों 5:17 पढ़ें। नयी सृष्टि होने पर कौन सी बातें बीत गई हैं?

____

जो बातें आपके जीवन से बीत गयी हैं उनमें से कुछ की सूची बनायें।

____

क्या नये बदलाव आपने अपने जीवन में देखें हैं?

____

ये सारे बदलाव इस बात का प्रमाण है कि आप एक नयी सृष्टि हैं आप पाप की सामर्थ से स्वतन्त्र हो गये हों क्योंकि आपका पुराना मनुष्यत्व मसीह के साथ क्रूस पर चढ़ गया। रोमियों 6:6,7 पढ़ें।

क्या क्रूस पर चढ़ा? ____________

कब? ____________

क्यों? ____________

रोमियों 6:11-13 पढ़ें। अब हमें अपने जीवन को कैसे देखना चाहिए? (पद 11)
____________________ और ____________________

स्वतन्त्रता की कुंजी यह है कि मसीह ने जो सच्चाई को क्रूस पर स्थापित किया है। हम उसे स्वीकार करें।

2. आपका नया सामर्थ स्रोत - पवित्र आत्मा

जब आप मसीह को अपना उद्धारकर्ता करके ग्रहण करते हो, पवित्र आत्मा जो परमेश्वर है (1 कुरिन्थियों 2:11,12) परमेश्वर से आपके सम्बन्धों पर मुहर करता (इफिसियों 1:13) तथा वह सदैव तक आपके साथ रहेगा।

पवित्र आत्मा क्यों उतरा ?

प्रत्येक वचन को पढ़ें व सही वाक्यों को पद के साथ जोड़ें।

____ यूहन्ना 16:8	अ.	सारे सत्यों में हमारी अगुवाई के लिए व भविष्य में होने वाली बातों को दिखाने केलिए आया
____ यूहन्ना 16:13	ब.	यीशु को महिमा देने के लिए आया
____ यूहन्ना 16:14	स.	हमें गवाही हेतू सामर्थी बनाने आया
____ रोमियो 8:16	द.	न्याय व धार्मिकता के निमित्त संसार को कायल करने को आया
____ प्रे. के काम 1:8	इ.	यह पुष्टि करने कि हम उसकी सन्तान हैं।

एक गवाह क्या है ? ____________________

हमारे भीतर पवित्र आत्मा किन फलों का उत्पादन करेगी ?
गलतियों 5:22,23 ____________________

क्या इन गुणों को आप अपने जीवन में चाहते हैं ? ____________
आपको क्या करना चाहिए ? यूहन्ना 15:4,5 ____________

अपनी आत्मिक स्थिति का आकलन करें

गैर मसीही: 1 कुरन्थियों 2:14, वो लोग जो भरोसा नहीं करते कि यीशु की मृत्यु उनके पापों का मूल्य है।

शारीरिक मसीही: 1 कुरन्थियों 3:1,2, जिन्होंने मसीह पर अपना उद्धारकर्ता करके विश्वास किया है परन्तु आज भी शरीर पर भरोसा करते हैं न कि आत्मा की सामर्थ पर।

आत्मिक मसीही: 1 कुरन्थियों 2:15, वे लोग मसीह पर उद्धारकर्ता करके भरोसा करते हैं। तथा पवित्र आत्मा को सामर्थ प्रदान करने की अनुमति देते हैं।

S - स्वयं का नियन्त्रण	S - स्वयं का नियन्त्रण	C - मसीह इस जीवन में है तथा उसका नियन्त्रण है।
C - मसीह इस जीवन से बाहर है।	C - मसीह इस जीवन में है परन्तु उसे नजरअन्दाज किया जा रहा है और जीवन में अगुवाई नहीं देने दिया जाता	S - स्वयं का अस्तित्व मसीह की इच्छा पर चलता है तथा पवित्र आत्मा फलों को ला रहा है

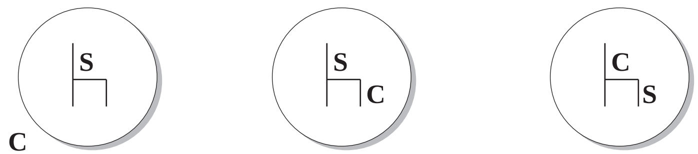

स्वयं-निर्देशित **स्वयं-निर्देशित** **मसीही-निर्देशित**

कौन-सा चक्र आपके जीवन की स्थिति को प्रदर्शित करता है ?

''क्या आपने आत्मापूर्ण जीवन की उस अदभुत खोज को कर लिया है'' - जिसके लेखक डा. बिल ब्राइट हैं। ज्यादा जानकारी के लिए इस पुस्तक को पढ़ें।

3. पवित्र आत्मा के द्वारा कैसे निर्देश व सामर्थ प्राप्त करें ?

अ. याद आने वाले पापों का **अंगीकार करें** (भजन सहिवा 66:18)

ब. अपने जीवन के प्रत्येक क्षेत्र को मसीह को **समर्पित करें** (रोमियों 6:12-13)

स. पवित्र आत्मा से **कहें** कि वह आपको सामर्थ व **निर्देश** दें।

हम जानते हैं कि यह परमेश्वर की इच्छा है क्योंकि उसने भरने के लिए कहा (निर्देशित व सामर्थी)

> ***''और दाखरस के मतवाले न बनों, क्योंकि उससे लुचपन होता है पर आत्मा से परिपूर्ण होते जाओ''*** इफिसियों 5:18

द. विश्वास से उसके वायदों की उद्घोषणा करो।
उसने कहा है कि जो कुछ उसकी इच्छा के अनुसार हम माँगे वह हमें देगा।
1 यूहन्ना 5:14,15
क्या यह आपके लिए परमेश्वर की इच्छा है कि आप उसके द्वारा मार्गदर्शन पायें ?
____

यदि आप उससे मार्गदर्शन माँगे तो क्या वह देगा ? ______________

आप कैसे जानते है ? ______________________

आत्मा से पूर्ण जीवन जीने का अर्थ, मसीह के आलौकिक जीवन को विश्वास के द्वारा पवित्र आत्मा की सामर्थ में जीना है।

यह प्रार्थना एक तरीका है जिसके द्वारा आप अपने जीवन में परमेश्वर के मार्गदर्शन को विश्वास से माँग सकते हैं।

> **''हे पिता अपने जीवन को अपनी मनमर्जी चला कर मैंने तेरे विरूद्ध पाप किया है मेरे पापों को क्षमा करने के लिए धन्यवाद। अब मैं आपसे निवेदन करता हूँ कि मेरे जीवन का सम्पूर्ण नियन्त्रण आप लें। विश्वास से मैं पवित्र आत्मा की सामर्थ, व नियन्त्रण की उदघोषणा करता हूँ और आपको धन्यवाद देता हूँ, मुझे मार्ग दर्शन देने के लिए।''**

क्या आपने पवित्र आत्मा से सामर्थ के लिए प्रार्थना की ? ______________

क्या आप विश्वास करते हैं कि अभी आपके जीवन में उसका नियन्त्रण है ? ________

आप कैसे जानते हैं ? ______________________

स्वयं करें

1. इस सप्ताह पवित्र आत्मा की सामर्थ में विश्वास से जीयें। उन क्षणों पर ध्यान दें जब आपने पुन:नियन्त्रण ले लिया हो यदि आपसे ऐसा हुआ है तो इस अध्याय के बिन्दु न.3 का प्रयोग करें और निरन्तर उसके नियन्त्रण की घोषणा करते रहें

3. इस पद को याद करें
''सो यदि कोई मसीह में है तो वह नई सृष्टि है पुरानी बातें बीत गयी हैं, देखों वे सब नयी हो गयी है'' 2 कुरिन्थियों 5:17

कैसे हम हमारे मसीही जीवन में सन्तुलन रख सकते हैं ?
हमारा अगला सत्र – **''सन्तुलित नया जीवन'' है**

समय ________ स्थान ________ दिनॉक ________

प्रार्थना द्वारा समाप्त करें।

मेरी कहानी का वर्णन

आपने यीशु मसीह को अपना व्यक्तिगत उद्धारकृता ग्रहण किया है। परमेश्वर ने आपके जीवन में अनोखे ढंग से कार्य किया है। अपनी कहानी का अपने मित्र को वर्णन करना एक ऐसा सरल व अदभुत मार्ग हैं जिससे आप समझा सकते हैं कि यीशु मसीह को ग्रहण करने का क्या अर्थ है आप इसे स्पष्ट व आकर्षित बनाना चाहेंगे फिर भी इसे सरल ही रहने दें ताकि जो कोई इसे सुने वह प्रभु को जानना चाहे और वह यह भी जान पाये कि उसे व्यक्तिगत रूप से कैसे ग्रहण किया जाता है।

आपकी सहायता हेतु कुछ सुझाव:

1. परमेश्वर से प्रार्थना करें कि वह आपको बुद्धि व मार्ग दर्शन दें जब आप अपनी गवाही को लिख रहे हैं (याकूब 1:5-6 पढ़ें)
2. जब आप अपनी गवाही को बताएें तो आपकी आवाज़ स्पष्ट, स्वाभाविक और विश्राम सहित हो।
3. कुछ इस तरह से अपनी कहानी को लिखें या बतायें कि जब आप अपने भूतकाल व वर्तमान को अनुभव बता रहे हो तो दूसरे स्वयं को उससे जुड़ा महसूस करें।
4. ऐसे भाव व्यक्त न करें कि मसीह जीवन, कष्टों से रहित होता है लेकिन इसके बजाय उन्हें यह बतायें कि किस प्रकार से मसीह का जीवन जो आप में विद्यमान है आपको आपके जीवन की कठिनाइयों को पार करने तें सामर्थ व बुद्धि प्रदान करता है।
5. आवश्यकता के अनुसार और बातों की स्पष्टता से जुड़ी व लिखी अपनी गवाही को याद करके तब तक अभ्यास करें जब तक की आप उसे स्वभाविक रूप से न बाँट लें।
6. अपनी कहानी को स्मरण कर तब तक दोहराऐं जब तक कण्ठस्थ न हो जाय।
7. निम्नलिखित चार बिदुंओं की रूपरेखा का अध्ययन करें तथा अपनी गवाही **मेरी कहानी** वर्णन कार्य पृष्ठ के अनुसार करें।

प्रभु यीशु मसीह को ग्रहण करने से पूर्व मेरा जीवन

- याद रखो, आप उन लोगों से बात कर रहे होंगे जो मसीह को नहीं जानते। क्या आपकी कहानी उनसे ताल्लुक रखती है ?
- व्याख्या करें कि आपका जीवन प्रभु में आने से पूर्व कैसा था ?
- किस बात से आप जाने कि आपको मसीह की आवश्यकता है ?

मैंने यीशु को कैसे ग्रहण किया

- खास रूप से बतायें कि कैसे आपने वास्तव में उसे अपनी जिन्दगी में आमन्त्रित किया ?
- आपकी कहानी को सुनने के पश्चात लोग और जानना चाहेंगे कि कैसे यीशु मसीह को अपने जीवन में ग्रहण किया जाय ?

मसीह को ग्रहण करने के पश्चात मेरा जीवन

- साधारण घटनाओं को स्पष्टता से ग्रहण करते हुए बतायें कि कैसे सकारात्मक बदलाव आपके जीवन में आये, उदासीनता से प्रेम, नफरत से देखभाल, निराशा से आनन्द, चिन्ताओं से शान्ति, जल्दबाजी से धीरज।

- मसीह अब आपके जीवन में क्या मायने रखता है।
- आपकी घटनाएं आम जिन्दगी से जुड़ी हों, याद रखें कि कोई सिद्ध नहीं है।
- प्रगट करें कि मसीह की वजह से आपके जीवन में यह परिवर्तन हो रहा है।

बिल्कुल ठीक आयत :-

- एक खास आयत को चुने जो आपकी तरफ से परमेश्वर की प्रसंशा करती हो, तथा धन्यवाद दें जो उसने आपके प्रति नया जीवन देने के द्वारा व भविष्य में आशा के रूप में दिया।

जब अपनी कहानी बता रहे हो: ध्यान रखें

- अपने हृदय की गहराई से व उत्तेजित होकर पवित्र आत्मा के कार्यों का उल्लेख करें।
- मुस्कुरायें! परमेश्वर से प्रार्थना करें कि वह आपका चेहरा आनन्दपूर्ण व तेजस्वी बनायें।

मेरी कहानी बताना,
मेरा जीवन, मसीह को ग्रहण करने से पूर्व

____

____

____

____

मैंने मसीह को कैसे ग्रहण किया खास रूप से बतायें

____

____

____

____

मसीह को ग्रहण करने के पश्चात

____

____

____

____

____

____

उचित बाइबल पद

____

____

____

____

सामर्थी आधार

सत्र 4

एक सन्तुलित नया जीवन

2 कुरन्थियों 5:17 __________ सही से उच्चारण करने के पश्चात जाँचें।
अपनी कहानी को अपने शिक्षक के साथ बाँटें तथा जरूरत पड़े तो दोहरायें।

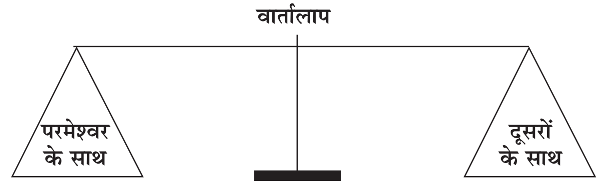

किसी भी अर्थपूर्ण रिश्ते को बढ़ाने के लिए बातचीत होना खास बात है। मसीही होने के नाते पवित्र आत्मा हमें सामर्थ प्रदान करता है कि हम सन्तुलित जीवन जियें:-

इस सत्र में हम सीखेंगे कि कैसे एक सन्तुलित जीवन जी सकते हैं जब हम

1. स्तुति व प्रार्थना के द्वारा परमेश्वर की अराधना
2. बाइबल अध्ययन द्वारा परमेश्वर से सीखें
3. संगति रखें व परमेश्वर के परिवार में बढ़ें
4. अपने नये जीवन को दूसरों से बाँटें

1. स्तुति व प्रार्थना के द्वारा परमेश्वर की अराधना:

परमेश्वर की अराधना का अर्थ इस बात का बोध है कि परमेश्वर सबसे बढ़कर महत्वपूर्ण है क्योंकि केवल वह ही योग्य है।

स्तुति-

परमेश्वर अपने लोगों की स्तुति से प्रसन्न होता है
भजन संहिता 33:1-3 पढ़ें, यह पद स्तुति के बारे में क्या कहते हैं?

____

सारा संसार परमेश्वर की महानता को प्रगट करता है। आप उसकी स्तुति क्यों करें?
इफिसियों 1:3 ________________________________

प्रार्थना

किस प्रकार की चीजों के बारे में हम परमेश्वर से प्रार्थना करें ?
फिलिप्पियों 4:6 ______

धन्यवाद देना क्यों महत्तवपूर्ण है ? ______

परमेश्वर नहीं चाहता कि हम किसी बात की चिन्ता करें। उसकी हमारे प्रति क्या इच्छा है ?
फिलिप्पियों 4:7 ______

यूहन्ना 16:24 में प्रार्थना का क्या उद्देश्य है ? ______

परमेश्वर आपसे प्रेम करता है:- आप उसकी सन्तान हो। वह चाहता है कि आप अपनी सारी चिन्ताओं को उसके पास ले आओ।

क्या इस समय कोई ऐसी बात है जिसके लिए हम मिलकर प्रार्थना कर सकें ?

आइये यहाँ पर रूककर, हमारी चिन्ताओं के विषय में प्रार्थना करें। आइये जो वह है उसके लिए उसकी स्तुति के द्वारा प्रारम्भ करें।

2. बाइबल अध्ययन के द्वारा परमेश्वर चाहता है कि हम उससे सीखें।

उसके विचार व गति हमारे विचारों से कहीं अधिक ऊँचे हैं तथा उन्हें समझ पाना हमारे लिए कठिन है। इसमें समय व प्रयास लगता है।

रोमियों 12:2 पढ़ें
हमें क्या नहीं होना चाहिए ? ______

हमें क्या होना चाहिए ? ______

कैसे ? ______

इसका परिणाम क्या होगा ? ______

क्या यही आपकी इच्छा ? ______

परमेश्वर का वचन बाइबल हमारे लिए एक निर्देशिका के समान है हम परमेश्वर के सत्यों पर विचार हेतु अपने मन को नया कर सकते हैं।

2 तिमुथी 3:16-17 पढ़ें। बाइबल अध्ययन से प्राप्त चार फायदों को लिखें

1. ______ 2. ______
3. ______ 4. ______

आप लगातार बाइबल का अध्ययन करना चाहेंगे। आज ही से प्रारम्भ करें यूहन्ना की पुस्तक से प्रत्येक दिन एक अध्याय पढ़ें।

3. संगति रखें व परमेश्वर के परिवार में बढ़ें

परमेश्वर चाहता है कि उसके परिवार के लोग होने के नाते हम एक दूसरे की संगति का आनन्द उठायें।

इब्रानियों 10:24-25 में लिखा है हमें नहीं करना चाहिए ______
______

दूसरे मसीहियों की संगति में होने से आपको कैसे फायदा होगा ? ______
______

यदि आप अभी तक कहीं सम्मिलित नहीं होते हैं तो बाइबल पर विश्वास करने वाली कलिसिया में जाना प्रारम्भ करें, या छोटे समूह में जायें। यह आपके लिए वास्तव में उत्साहवर्द्धक हेगा।

एक साथ बढ़ें

अगला कदम उठाऐं व परमेश्वर के वचन के ज्ञान में बढ़ें। यदि आपने अभी प्रारम्भ नहीं किया हो तो इस हफ्ते से अपने मित्र के साथ सामर्थी आधार की कक्षा में जायें। इसके साथ **एक-से-एक** की सामर्थी शिष्यता में जाने की योजना बनायें। कोई न कोई आपसे मिलने को उपस्थित होगा।

हमें परिश्रमी क्यों होना चाहिए ? 2 तिमुथी 2:15 इस पद को लिखें

______
______
______
______
______

4. अपने नये जीवन को दूसरों में बाँटें

आपके नये जीवन के कारण जो चीजें अब आपकी है आप उनकी अच्छाइयों को समझने की शुरूआत कर रहे हैं वो कौन से बदलाव हैं जो आपने अभी तक अनुभव किये हैं।

जैसे-जैसे आपमें बदलाव आयेगा, आपके परिवार व मित्रगण भी आनन्दित होंगे।

जब वह मसीह को जानने के व्यक्तिगत अनुभव का आनन्द प्राप्त कर सकते हैं तो फिर दूसरी बातें क्यों हम उन से बाँटें?

प्रेरितों के काम 4:12 ______________________________

हमने किन बातों से छुटकारा पाया है? ______________________________

यदि आप मसीह का अनुसरण करें तो वह आप के लिए क्या करेगा?
मरकुस 1:17 ______________________________

आपने मेरी कहानी तैयार कर ली है अत: आप उसे किसी मित्र के साथ बाँट सकते हो। आपके किस मित्र से आप और मैं मिल सकते हैं ताकि आप अपनी कहानी उसे सुना सको, कि कैसे आपने मसीह को ग्रहण किया व कैसे मसीह आपको आशीषित कर रहा है।

मैं चाहुँगा कि हम उससे _______________ कहाँ? _______________
यदि तुम्हारे मित्र ने प्रभु यीशु मसीह को ग्रहण किया तो हम उसे **सामर्थी आधार**, में आमन्त्रित करेंगे इसके साथ-साथ अपने **जीवन समूह** या फिर चर्च की अन्य गतिविधियों में बुलायेंगे ताकि वहाँ आकर वह परमेश्वर की सच्चाई के बारे में जान सकें? याद रखें मैं वहाँ पर आपकी सहायता के लिए रहुँगा।

एक से एक को, सामर्थी शिष्यता के बारे में बात करें व उसमें से पढ़ें- यह एक अवसर है। ध्यान दें कि आप लगातार **एक से एक को सामर्थी शिष्यता** पर चर्चा करते रहे, परन्तु यह बहुत महत्त्वपूर्ण है कि किसी व्यक्ति को **सामर्थी शिष्यता** पढ़ाने से पूर्व **सामर्थी आधार** की शिक्षा दें।

निम्न पद को याद करें:

> ***''अपने आप को परमेश्वर का ग्रहणयोग्य और ऐसा काम करने वाला ठहराने का प्रयत्न करो जो लज्जित होने न पाये और जो सत्य के वचन को ठीक रीति से काम में लाता हो।*** 2 तिमुथी 2:15

प्रार्थना द्वारा समाप्त करें।

सामर्थी शिष्यता

एक से एक को
एक अवसर

ज्यादातर मसीह आज उस प्रकार के आलोकिक सामर्थी व सम्पूर्ण जीवन का अनुभव करना चाहेंगे जिसका विवरण नये नियम की पत्रियों में दिया गया है। यह उनके लिए कोई प्रदर्शन नहीं है। परन्तु उनके जीवन में यह बदलाव, उस नये जीवन की सामर्थ से हुआ है जिसे वह ***''मसीह उनमें जीवित है''*** कहते हैं।

इस नये जीवन की गुणवत्ता का अनुभव सीधे, हमारे प्रभु के वचनों के प्रति प्रतिउत्तर से जुड़ा होता है। बीज बोने वाले के दृष्टान्त में, यीशु ने उदाहरण दिया कि लोग चार प्रकार से उसके वचन का प्रतिउत्तर देते हैं। पढ़ें मत्ती 13:3-9, तथा 18-23

किस प्रकार की भूमि से आप अपने जीवन की तुलना करना चाहोगे?

सामर्थी शिष्यता एक ऐसा जरिया है जिससे परमेश्वर के साथ आपकी निरन्तर पवित्र आत्मा की सामर्थ में बढ़ने व दूसरों को यह सुसमाचार देने में सहायता होगी।

सामर्थी शिष्यता क्या है?

1. यह श्रखंला आपके प्रेम को परमेश्वर में व दूसरों में बढ़ने हेतू आपकी सहायता के लिए बनायी गयी है।

2. इसके अन्दर नौ एक-से-एक शिक्षण का समावेश है जो कि एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति तक पहुँचेगा जो दूसरे को शिक्षा देगा।

3. हम हफ्ते में एक बार एक से एक के लिए - आधा घण्टा, व्यक्त करने, बाइबल सिद्धान्तों के अध्ययन हेतू व साथ मिलकर प्रार्थना करेंगे।

एक से एक क्यों?

1. लघु समय की एक से एक को शिष्यता आसानी से पुन:उत्पादन करती हैं। (शिक्षा को दूसरे व्यक्ति तक पहँचाने का सबसे प्रभावशाली तरीका)

2. लगभग सभी लोग व्यक्तिगतरूप से इस प्रशिक्षण को कर सकते हैं। पुरुष, पुरुषों को तथा महिला, महिला को शिक्षा देती है।

3. एक अगुवे के रूप में आपका विकास करने की इसमें क्षमताऐं हैं?

4. आप और अधिक उत्तरदायी हो जाते हैं।

5. यह आपकी मसीह के प्रति आज्ञाकारिता के समर्पण हेतू सहायता करता है जिससे आप अपने शिष्यों के लिए एक आदर्श बनो।

6. आपको एक मजबूत मसीही सम्बन्ध बनाने का अवसर प्राप्त होगा।

7. इसके द्वारा हमें सामर्थी शिष्यता कार्यक्रम की समय सारणी हेतू लचीलापन प्राप्त होता है।

सामर्थी शिष्यता के लक्ष्य हैं:

1. आपकी परमेश्वर के साथ सम्बन्ध बनाने व उसकी सामर्थ को अनुभव करने में सहायता प्राप्त हो (इफिसियों 3:16,17)

2. आपको परमेश्वर के वचन को गहराई से समझने, व प्रार्थना के जीवन में मजबूती प्राप्त करने में सहायता हो। (भजन संहिता 1:23 – कुबुस्सियों 4:2)

3. आपको दूसरों के साथ मसीही सम्बन्ध बनाने में सहायता मिले। (1थिस्लुनिकियों 3:12)

4. मसीही जीवन से सम्बन्धित आपके प्रश्नों का समाधान। (प्ररितों के काम 17:11)

5. आपके जीवन में मजबूत बुनियाद पढ़ सके व आप सीख सकें कि किस तरह से यह आशीष दूसरों तक पहुँचायें। (2 कुरन्थियों 5:18)

सामर्थी शिष्यता में सम्मिलित होने के लिए मुझमें कौन सी विशेष योग्यताऐं हों ?

1. मसीह के सम्बन्ध में बढ़ने की इच्छा।

2. सीखने का स्वभाव- दूसरों से सीखने व बातचीत करने को इच्छुक हो।

3. साप्ताहिक कार्यक्रम में भाग लेने को व शिक्षा सम्बन्धी सामग्री 2 खरीदने को समर्पित हो।

4. शिक्षा को सम्पन्न करने का समर्पण हो।

क्या आप प्रार्थना सहित इन समर्पणों को सम्मिलित करना चाहेंगे ?

मैं बाद में आप को ______________________ जवाब के लिए बुलाऊँगा।

सामर्थी

आधार

अगुवों की उत्तर-पुस्तिका

आपके पास एक सुन्दर पुरस्कारपूर्ण अवसर है कि आप जवान मसीह के विश्वास को बढ़ाते हुऐ मसीह यीशु में चले। जैसे-जैसे वह **नये जीवन** का आरम्भ करेंगे, आप स्वयं उनको परिपक्वता में बढ़ता देख तथा यीशु मसीह का सच्चा शिष्य बनता देखकर प्रसन्न होंगे। यही सर्वोत्तम सेवकाई आप कर सकते हो जो कि महान आज्ञा का सार है। मत्ती 28:18-20 वहाँ कहा गया है ***''हमें जाकर चेला बनाना है''*** वह आगे कहता है हम कैसे चेला बनाते हैं- ***''जो कुछ मैंने तुम्हें सिखाया है उन्हें आज्ञा मानना सिखाओ''*** प्रभु यीशु मसीह ने स्वयं इस सेवकाई को अधिकृत किया है तथा वादा किया है कि वह हमें सामर्थ देगा।

प्रेरित पौलुस कुलुस्सियों 1:28,29 में इस प्रकार कहते हैं।

> ***''जिसका प्रचार करके हम हर एक मनुष्य को चेतावनी देते हैं। और सारे ज्ञान से हर एक मनुष्य को सिखाते हैं कि हम हर एक व्यक्ति को मसीह में सिद्ध करके उपस्थित करें, इसी के लिए मैं उसकी उस शक्ति के अनुसार जो मुझ में सामर्थ के साथ प्रभाव डालती है तन मन लगाकर परिश्रम भी करता हूँ।''***

हमारी जिम्मेदारी है कि हम मेहनत से चेलों को शिक्षा व प्रशिक्षण दें। परमेश्वर की जिम्मेदारी चेलों में बढ़ौत्तरी व सामर्थ प्रदान करना है। जब हम अपना कार्य विश्वास योग्यता के साथ में पूरा करते हैं वह हमें इस्तेमाल करेगा।

प्रभावशाली पुनःमिलन के लक्ष्य

जो समय इन युवाओं के साथ बिताते हैं वह तब और ज्यादा प्रभावशाली होगा जब आप स्पष्टता से यह समझते हो कि आप उनके किस बात के निर्माण की आशा रखते हैं।

इन चार सत्रों के लिए लक्ष्य

1. कि मनुष्य की उन बुनियादी सच्चाईयों को समझने में सहायता हो सके जो जीवन जीने के लिए परमेश्वर का वचन हमें सिखाता है।
2. कि व्यक्ति अपना भरोसा परमेश्वर पर रख सके, व परमेश्वर के वचनानुसार जीवन यापन कर सके।
3. कि व्यक्ति आपसे व दूसरे मसीहियों के साथ एक घनिष्ठ मित्रता बना सकें।
4. परमेश्वर की प्रभावशाली सेवा में, व परिपक्वता में लोग बढ़ सकें जैसे-जैसे वह दूसरों को सामर्थी आधार की शिक्षा प्रदान करते हैं।

अपने पहले वार्तालाप की तैयारी करना

यदि आपको सुसमाचार प्रचार करने का व किसी व्यक्ति को प्रभु यीशु को अपना उद्धारकर्ता ग्रहण करने में सहायता, करने का अवसर मिलता है या किसी व्यक्ति का नाम उसके हालचाल पता करने के लिए आपको दिया जाता है और आपको अवसर लिता है कि अपनी गवाही से आप बता सकें कि कैसे एक मित्र ने युवा मसीह के तरह बढ़ने में आपकी सहायता की। उनकी बढ़ोत्तरी में सहायता करने का प्रस्ताव रखें। आप कह सकते हैं- **''मैं बहुत प्रसन्न हूँ कि आपने यह निर्णय लिया। अब यह अति महत्वपूर्ण है कि आप अपने नये जीवन की भरपूरी का पूर्ण आनंद उठायें! क्या हम कुछ दिनों में एक साथ मिल सकते हैं ताकि उन सच्चाईयों पर नज़र डाल सकें जो मसीह में नये जीवन के तहत आपकी सहायता करेंगे।''**

यदि वह तैयार होते हैं तो मिलने के लिए एक समय, दिनॉक व स्थान नियुक्त करें। यदि वे इस बार के पुन:मिलन में नहीं मिले हैं तो उन्हें जीवन समूह या फिर कलिसिया की अन्य गतिविधियों सम्मिलित करें, होने दें कि जिस व्यक्ति ने आपको अपना नाम दिया है वह अपने निर्णय को भी जाने। एक मित्र के समान रहे तथा निरन्तर उनके लिए प्रार्थना करते रहे।

एक अच्छा सम्बन्ध विकसित करना

जो सम्बन्ध आप बनाते हैं वह प्रभावशाली 'पुन:मिलन' के लिए सबसे जरूरी तत्व है।

एक अच्छे मित्र के समान

1. अपने शिष्यों में रूचि दिखायें
   - अधिकाधिक उनका नाम प्रयोग करें, उनकी तरफ देखें व मुस्कुरायें
   - उनके जीवन व पसन्द के बारे में पूछें।
   - जब वे बातें करें तो पूर्ण रूचि से सुनें।
   - जानने की कोशिश करें कि कौन-सी बातें वास्तव में उनकी चिन्ता हैं
   - यदि सम्भव हो तो उनकी जरूरत के वक्त आप हाज़िर हों।
   - उन्हें बतायें कि कैसे यीशु उनके जीवन से ताल्लुक रखता है।
   - प्रेम के आधार पर उन्हें ग्रहण करें, प्रदर्शन के नहीं।
   - जो नया सत्य उन्होंने खोजा है उसके प्रति आप उत्तेजित रहें।
   - किसी भी प्रश्न व उत्तर को खारिज़ न करें।
   - दूसरों की प्रशंसा करें।

2. अपने शिष्यों से अपनी जीवनी बाटें
   - बतायें कैसे यीशु आपके लिए सच्चे हैं।
   - प्रत्येक बात में आप आदर्श बनें।
   - अपनी जरूरतों के प्रति ईमानदार बने।

   - पारदर्शी रूप से बताने को तैयार रहे कि आप प्रभु के वचन को अपने जीवन में कैसे लागू करते हैं।
   - यदि आपको जवाब नहीं पता है तो कहें कि मुझे नहीं पता। एक साथ मिलकर जवाब ढूढ़ने का प्रयास करें।
   - परमेश्वर पर अपने भरोसे को प्रगट करें।
   - उत्तेजित रहें।
   - मित्र के समान हो, वार्तालाप के समय के अलावा भी एक साथ समय बितायें, वो कार्य करें जो दोनों को पसन्द हो।
   - अपने शिष्य के लिए निरन्तर प्रार्थना करें।

आपका पुन:मिलन सत्र

इससे पहले कि आप लोगों के साथ मिलें प्रत्येक सत्र सामग्री से चिर परिचित हो जाये। प्रभावशाली 'पुन:मिलन' के लिए इस रूपरेखा का अनुसरण करें।

1. एक ऐसे स्थान का चुनाव करें जो आरामदायक हो व ध्यान न भटकाने वाला हो।

2. एक दूसरे को अभिवादन करें। जब पहली बार मिलें तो कुछ समय एक दूसरे को जानने में बितायें। परिवार के बारे में पूछे, व्यवसाय के बारे में इत्यादि। प्रत्येक सप्ताह उनके जीवन में अपनी रूचि दर्शायें। निश्चित रहे कि 30 मिनट आपने अध्ययन करना है।

3. यह कहते हुए प्रथम सत्र में प्रवेश करें **''मैं अतिप्रसन्न हूँ कि हम सब एक साथ मिल सकें व एक दूसरे से परिचित हो सकें। जवान मसीह होने के नाते जो बातें हम सीखने जा रहे हैं आप उनसे आनन्दित होंगे। यह पर्चे हमारी खास मुद्दों पर चर्चा करने में हमारी सहायता करेंगे।''** अगला सत्र यह कहते हुए विषय की भूमिका बनाता है। **''इस हफ्ते हम पढ़ेंगे (नाम को पढ़ें)''** प्रत्येक सत्र के प्रति अपनी प्रशंसा को व्यक्त करें।

4. प्रत्येक सप्ताह आपका पूरा सत्र लाये तथा अपने शिष्य के लिए एक नया सत्र

5. प्रत्येक सत्र के हर बिन्दू पर चर्चा करें।
   अ. अध्याय व बाइबल की आयतों को बार-बार पढें। कोष्टक में दिये गये पदों को केवल तभी पढ़ें जब उस बारे में कोई प्रश्न पूछा जा रहा हो।

   ब. हो सकता है कि सत्र एक में आपको बाइबल देखने के लिए भागीदार होना पढ़ें परन्तु अगले सत्र में उन्हें बाइबल लाने के लिए उत्साहित करें। यदि उनके पास बाइबल नहीं है तो बाइबल का प्रबन्ध करने में सहायता करें। अपने चेलों की सहायता करें कि वह बाइबल की पुस्तकों से परिचित हो जायें। उन्हें विषय-सूची

दिखाकर बतायें कि बाइबल किस प्रकार से पुस्तकों में, अध्यायों में व पदों में विभाजित है। धीरज धरे उन्हें स्वयं पदों को ढूढ़ने दें।

स. चर्चा को अतिरिक्त प्रश्नों के द्वारा जोशीला बनाये: जैसे और क्या आप इन वचनों में देखते हैं ?
- आप क्या सोचते हैं यीशु का ________________ इससे क्या अर्थ होगा ?
- आप इसे अपने शब्दों में कैसे कहेंगे ?
- यह वर्तमान में हमें कैसे प्रभावित करता है ?
- क्या आपने इस सत्र में अपने बारे में कुछ सीखा ?

स्वयं करें

अपने शिष्यों को उत्साहित करें कि जो बाइबल के सिद्धान्त उन्होंने प्रत्येक सत्र में सीखें हैं उनका प्रयोग करते हुए वह अपने संक्षिप्त गृह कार्यों को पूरा करें।

वचन याद करना

परमेश्वर के वचन उनके मनों में घर करने के महत्व पर जोर डालें। वे यह जाने कि अगले सत्र में आप उनसे इन वचनों को मुहजबानी सुनेंगे।

समापन

सत्र 1,2 व 3 के अन्त में अपने अगली बार मिलने के समय को निर्धारित करें। सत्र 3 के अन्त में अपने शिष्यों में से एक को मेरी कहानी के कार्यपृष्ट की सहायता द्वारा मसीह में आने के अनुभवों को व्यक्त करने को कहें। एक अवसर का प्रबन्ध करें जिसमें वह अपनी कहानी मित्रों से बाँट सकें। यदि उनके मित्र प्रभु यीशु मसीह को ग्रहण कर लेते हैं तो आप अपने शिष्य से ''सामर्थी शिष्यता'' की कक्षा में जाने से पूर्व ''सामर्थी आधार'' की बातों को दूसरों में बाँटना प्रारम्भ करें। सत्र 4 के अन्त में सामर्थी शिष्यता से पढ़ें - उन्हें चुनौती दें कि वह सामर्थी शिष्यता में निरन्तर आगे बढ़ें। आप उन्हें ले जा सकते हैं या प्रबन्ध कर सकते हैं कि वह नये शिक्षक से मिल सकें।

सत्र 4 के समापन पर उन्हें **उपलब्धियों के प्रमाण पत्र** प्रदान करें। सम्भता आप अपने जीवन समूह में इन प्रमाण पत्रों को दे सकते हैं।

प्रार्थना द्वारा समाप्त करें।

उपलब्धियों का प्रमाण-पत्र

प्रमाणित किया जाता है कि

____

ने सफलतापूर्वक

Dynamic Basics

को सम्पन्न किया।

दिनाँक ________________

____

प्रशिक्षक

लीडरशिप ट्रेनिंग सेंटर
बाबूबासा / देवदंगा
पोस्ट ऑफिस आंचल,
सिलीगुड़ी 734403,
पश्चिम बंगाल

सामर्थी आधार

एक से एक को

DYNAMIC CHURCHES
INTERNATIONAL

लीडरशिप ट्रेनिंग सेंटर
बाबूबासा / देवदंगा
पोस्ट ऑफिस आंचल,
सिलीगुड़ी 734403,
पश्चिम बंगाल

सामर्थी
आधार

एक से एक को

DYNAMIC CHURCHES
INTERNATIONAL